क्या गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा था कि मुसलमानों पर कभी भरोसा नहीं करना ?

रिसर्च एवं प्रस्तुति : अब्दुल अज़ीम

अनुवाद एवं संपादन : हाफिज शानउद्दीन

ੴ सतिगुर प्रसादि ।।

क्या गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा था कि मुसलमानों पर कभी भरोसा नहीं करना

ਭੁਜਾ ਭਿਵਾਂਈਐ ਤੇਲ ਸਿਉਂ ਦੀਜੈ ਤਿਲੈ ਲਗਾਇ।
ਮਾਰੋ ਹਿੰਦੂਅਨ ਕਸਮ ਕਰ ਇਨ ਗਯੋ ਰਸੂਲ ਬਤਾਇ॥

(ਪ੍ਰਚੀਨ,) ਸ੍ਰੀ ਗੁਰ ਪੰਥ ਪ੍ਰਕਾਸ਼, ਸਾਖੀ, ੧, ਦੋਹਰਾ, ੩੧ ।)

हिंदी

भूजा भिवांईऐ तेल सिउं दिजै तिलै लगाए।
मारो हिंदूअन कसम कर इन गएउ रसूल बताए।।

(प्राचीन,) श्री गुरु पंथ प्रकाश, साखी, १ दोहा, ३१)

अर्थात : मुसलमानों को हजरत मोहम्मद साहब रसूलुल्लाह बता कर गए कि, हाथ को तेल के डिब्बे में कोहनी तक डालो फिर उसी हाथ को तिल की बोरी में डालो, जितने तिल हाथ से चिपके उतनी बार कसम खाकर हिंदुओं को मारो। अर्थात तुम्हें पाप नहीं लगेगा।

उपरोक्त उल्लिखित दोहे को प्रमाण बनाकर पिछले कई वर्षों से कुछ कट्टरवादी मानसिकता वाले लोग मुसलमानों के प्रति यह झूठ फैलाने का प्रयास कर रहे हैं के उक्त कथन सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह जी का है जिसका भावार्थ है ;

"हाँथ को तेल के डिब्बे में कोहनी तक डालो, फिर उसी हाँथ को तिल की बोरी में डालो, जितने तिल हाँथ से चिपके उतनी बार भी मुस्लिम कसम खाये तो भी उनका भरोसा मत करना। गुरु गोविंद सिंह जी का यह कथन हर हिन्दू को अवश्य याद रखना चाहिए"।

इस तरह के मिथ्या तथ्य को भ्रामक प्रचार का सामग्री बना कर नफरत फैलाने वाले भारतीय सामाजिक भाईचारा और विश्वास को खत्म करने कि नापाक कोशिश करते रहे हैं। इस आलेख में हम उक्त कथन कि निम्नांकित बिन्दुओं पर पड़ताल करेंगे कि क्या वास्तव में उक्त कथन सिख धर्म के सामाजिक एवं धार्मिक सुधार प्रणेता आदरणीय श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का है अथवा नहीं !

(१) क्या वास्तव में मुसलमानों के प्रति श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज कि उपरोक्त विचारधारा थी ?

(२) क्या वास्तव में श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने अपने जीवन में कभी ऐसी बात कही थी ?

इन दोनों प्रश्नों और उपरोक्त दोहा पर टिप्पणी करने से पूर्व हम श्री गुरु गोविंद सिंह जी के जीवन के कुछ पहलुओं पर दृष्टि डालते हैं।

गुरु गोविंद सिंह जी का मुसलमानों के साथ और मुसलमानों का गुरु गोविंद सिंह जी के साथ संबंध

उपरोक्त दोहा के भ्रांति निवारण हेतु ये आवश्यक है कि सर्वप्रथम हम यह देखें और समझें कि गुरु गोविंद सिंह जी के जीवन में उनका संबंध मुसलमानों के साथ किस प्रकार का रहा है। सिख मजहब कि प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तक **"सिखों और मुसलमानों का ऐतिहासिक सांझ" (ਸਿੱਖਾਂ ਤੇ ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਦੀ ਇਤਿਹਾਸਕ ਸਾਂਝ)** जिसके लेखक अली राजपुरा हैं एक स्थान पर लिखा है : "गुरु गोविंद सिंह जी को अरबी और फारसी सिखाने वाले शिक्षक मुसलमान थे"।

(सिखों और मुसलमानों का ऐतिहासिक सांझ, पृष्ठ: ९७)

यदि गुरु गोविंद सिंह जी का मुसलमानों के प्रति उपरोक्त वर्णित दोहा वाला दृष्टिकोण होता तो वह कभी भी मुसलमान से शिक्षा प्राप्त नहीं करते, और ना ही किसी मुसलमान को अपना शिक्षक बनने का अवसर देते, परंतु गुरु गोविंद सिंह जी का मुसलमानों से शिक्षा प्राप्त करना, और मुसलमानों को अपना शिक्षक या गुरु बनने का अवसर देना, इस बात को स्पष्ट करता है कि गुरु गोविंद सिंह जी कि मुसलमानों के प्रति उपरोक्त विचारधारा नहीं थी।

गुरु गोविंद सिंह जी के युद्ध में मुसलमानों की भागीदारी और बलिदान

पीर बुधु शाह जिनका असली नाम बदरूदीन था जो सिख धर्म कि ऐतिहासिक पुस्तकों में सदा अमर रहेंगे। जिनकी शहादत को सिख कौम पर बहुत बड़ा क़र्ज माना जाता है। इनके बारे में सिख मजहब कि एक प्रसिद्ध, प्रामाणिक और विश्वसनीय ऐतिहासिक पुस्तक **"श्री गुरु गोविंद सिंह जी" (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ)**, लेखक प्रोफेसर साहिब सिंह जी में उल्लिखित है :

> "पीर बुधु शाह (बदरूदीन) अपने चार पुत्रों, दो भाइयों और 700 अनुयायियों के साथ सढोरा से चलकर गुरु गोबिन्द सिंह के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़े। इस लड़ाई में गुरु जी की फौज को जीत तो हासिल हुई, लेकिन पीर बुधु शाह के दो पुत्र अशरफ शाह और मोहम्मद शाह व भाई भूरे शाह शहीद सहित 500 अनुयायी शहीद हुए। सिखों ने पीर बुधु शाह के इस बलिदान को इतनी बड़ी कृपा समझे के उनके नाम का एक गुरुद्वारा पीर बुधु शाह गुरुद्वारा का निर्माण कर दिया, जहां आज भी हर २१ मार्च को पीर बुधु शाह जी का शहीदी दिवस मनाया जाता है, और कीर्तन किया जाता है"।

(श्री गुरु गोबिंद सिंह जी, पृष्ठ: ७२ - ७८)

इस पुस्तक के फुटनोट में लिखा है कि पीर बुधु शाह के कहने पर गुरु गोविंद सिंह जी ने पठानों को अपनी फौज में भर्ती किया था। **(श्री गुरु गोबिंद सिंह जी, पृष्ठ: ७३)** इस पुस्तक से उद्धृत वाक्य इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि यदि गुरु गोविंद सिंह जी कि

मुसलमानों के प्रति उपर्युक्त विचाधारा होती, तो वह कभी भी मुसलमानों के साथ मिलकर युद्ध नहीं लड़ते, और ना ही कभी एक मुसलमान के कहने पर अन्य मुसलमानों को अपनी फौज में भर्ती करते। परंतु गुरु गोविंद सिंह जी का पीर बुधु शाह के साथ मिलकर युद्ध लड़ना और पीर बुधु शाह के कहने पर पठानों को अपनी फौज में भर्ती करना इस बात को प्रमाणित करता है कि गुरु गोविंद सिंह जी कि मुसलमानों के प्रति हीन विचारधारा नहीं थी।

गुरु गोविंद सिंह जी के हक में एक मुसलमान कि गवाही

सिख मजहब की प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तक "सिखों और मुसलमानों का ऐतिहासिक सांझ" (**ਸਿੱਖਾਂ ਤੇ ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਦੀ ਇਤਿਹਾਸਕ ਸਾਂਝ**) लेखक अली राजपुरा में एक वाक़्या इस प्रकार वर्णित है :

> "काजी अनायत अली जो काजी नूरपुरिया के नाम से भी प्रसिद्ध थे, मछिवारा के पास नूरपुरा गांव के रहने वाले थे। कहा जाता है कि मुगल शासन में सैनिकों ने सिखों के दसवें गुरु कि तलाश में एक वरिष्ठ पीर की पहचान करने के लिए काजी नूरपुरी को बुलाया, तो यह सुनकर एक बाल्टी पानी काजी साहब के हाथ से गिर गया। और काजी साहब ने गुरु गोविंद सिंह जी को पहचान कर भी यह गवाही देकर जान बचा ली कि यह सर्वोच्च का पीर है। इसके बाद काजी साहब कि स्मृति में गांव वालों ने गवाहि साहिब पातशाही दसवां गुरु भवन पंजाब में बना दिया"।

(सिखों और मुसलमानों का ऐतिहासिक सांझ, पृष्ठ: ९६)

एक मुसलमान का गुरु गोविंद सिंह जी के हक में गवाही देना भी इस बात को प्रमाणित करता है कि, गुरु गोविंद सिंह जी और मुसलमानों के बीच भाईचारा विश्वास और सद्व्यवहार था। इन तीन ऐतिहासिक ठोस प्रमाणों के आधार पर यह बात सिद्ध हो जाती है कि गुरु गोविंद सिंह जी की मुसलमानों के प्रति उपर्युक्त विचारधारा नहीं थी।

इसके अतिरिक्त गुरु गोविंद सिंह जी का जीवन भरा पड़ा है जो उपरोक्त विचारधारा के बिल्कुल विपरीत है, परंतु छोटे से लेख में सारे प्रमाण देना उचित नहीं।

गुरु गोविंद सिंह जी का मुसलमानों पर विश्वास का कारण

गुरु गोविंद सिंह जी के भीतर मुसलमानों के प्रति विश्वास और सद्भाव का कारण सिखों कि सर्वोच्च प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब कि निम्न शिक्षा है :

ਮੁਸਲਮਾਣੁ ਮੋਮ ਦਿਲਿ ਹੋਵੈ॥ ਅੰਤਰ ਕੀ ਮਲੁ ਦਿਲ ਤੇ ਧੋਵੈ॥ ਨ ਦੁਨੀਆ ਰੰਗ ਨ ਆਵੈ ਨੇੜੈ ਜਿਉ ਕੁਸਮ ਪਾਟੁ ਘਿਉ ਪਾਕੁ ਹਰਾ॥

(ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ, ਰਾਗੁ ਮਾਰੂ, ਮ: ੫, ਅੰਗ ੧੦੮੩)

हिंदी

मुसलमाणु मोम दिलि होवे॥ अंतर की मलु दिल ते धोवे॥ दुनीआ रंग न आवै नेड़े जिउ कुसम पाटु घिउ पाकु हरा॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, राग मारू, म: ५, पृष्ठ: १०८३)

अर्थात : मुसलमान का दिल मोम की तरह नरम होता है, वह अपने अन्तर्मन कि मैल को दिल से घो देता है। वह दुनिया के रंग - तमाशों के निकट नहीं जाता और यूं पवित्र होता है, जिस प्रकार फूल, रेशम, घी एवं मृग-चरम पाक पवित्र होता है।

अब प्रश्न है, **(प्राचीन) श्री गुरु पंथ प्रकाश, साखी-१, दोहा -३१** का तो यह कथन गुरु गोविंद सिंह जी का नहीं है, और ना गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने पूरे जीवन काल में कभी ऐसी कोई बात कही है। यह कथन रतन सिंह भंगू का है जो इस पुस्तक के लेखक हैं। निम्नलिखित दोहा बहुत से कारणों से गलत सिद्ध होता है ;

भूजा भिवांईऐ तेल सिउं दिजै तिलै लगाए।

मारो हिंदूअन कसम कर इन गएउ रसूल बताए।।

(प्राचीन) श्री गुरु पंथ प्रकाश, साखी, १ दोहा, ३१)

कारण : (१) रतन सिंह भंगू ने गुरु गोविंद सिंह जी पर धोखे से हमला करने वाले व्यक्ति विशेष को देखकर संपूर्ण मुसलमानों को एक लाठी से हांका है, और यह सर्वविदित तथ्य है कि किसी व्यक्ति विशेष को देखकर संपूर्ण समुदाय को उसी दृष्टि से देखना उचित नहीं है।

कारण: (२) रतन सिंह भंगू ने बड़ी चालाकी से इस दोहे का संबंध रसूल मोहम्मद (स-अ-व) से जोड़ा है ताकि दोहे कि सत्यता एवं प्रमाणिकता सिद्ध हो सके और इसी बहाने रसूल मोहम्मद (स-अ-व) पर आक्षेप भी लगाया है। जबकि मोहम्म (स-अ-व) ने अपने जीवन में ऐसी कोई बात नहीं कही है।

कारण : (३) यह सिख मजहब का सर्वसम्मत सिद्धांत है कि जब कोई बात गुरु ग्रंथ साहिब से टकराएगी, तो गुरु ग्रंथ साहिब को प्राथमिकता दी जाएगी। जैसा के गुरु ग्रंथ साहिब के निम्नलिखित दो स्थानों पर गुरुओं की बातों को सत्य मानने अर्थात प्राथमिकता देने की बात कही गई है।

(गुरु ग्रंथ साहिब, राग गउड़ी, म: ४, पृष्ठ: ३०८)

(गुरु ग्रंथ साहिब, राग धनासरी, म: ४, पृष्ठ: ६६७)

और रतन सिंह भंगू का यह कथन गुरु ग्रंथ साहिब के विपरीत है। उदाहरण के लिए उपरोक्त में वर्णित गुर ग्रंथ साहिब **(राग मारू, म: ५, पृष्ठ: १०८३)** का प्रमाण देख सकते हैं।

कारण : (४) मौजूदा जमाने के अक्सर सिख विद्वान जब भी "**(प्राचीन) श्री गुरु पंथ प्रकाश** " की कथा करते हैं, तो इस दोहा को त्याग देते हैं, जो इस बात को प्रमाणित करता है कि आज के जमाने के सिख विद्वान भी रतन सिंह भंगू कि बात से सहमत नहीं हैं।

इन चार ठोस कारणों के आधार पर "**(प्राचीन) श्री गुरु पंथ प्रकाश, साखी-१, दोहा -३१**" मिथ्या सिद्ध होता है।

इन्हीं चंद शब्दों के साथ मैं अपने लेख को समाप्त करता हूं, यदि किसी कट्टरवादी मानसिकता वाले व्यक्ति की तरफ से कोई प्रतिक्रिया आती है तो ईश्वर की कृपा से अधिक विस्तृत चर्चा की जाएगी।

(ईश्वर हमारे देश में एकता, भाईचारा और गंगा-जमुनी संस्कृति को बरकरार रखे। तथास्तु।)

धन्यवाद।

दिनांक – ४/ ४/ २०२३

- **संपर्क सूत्र : email : islamdharmkisattyata@yahoo.com**
- **https://www.youtube.com/channel/UCevyCLxXCrIUETXDW11J1f5Q**

ISLAM DHARM KI SATTYATA

(प्राचीन) श्री गुरु पंथ प्रकाश, साखी, १ दोहा: ३१
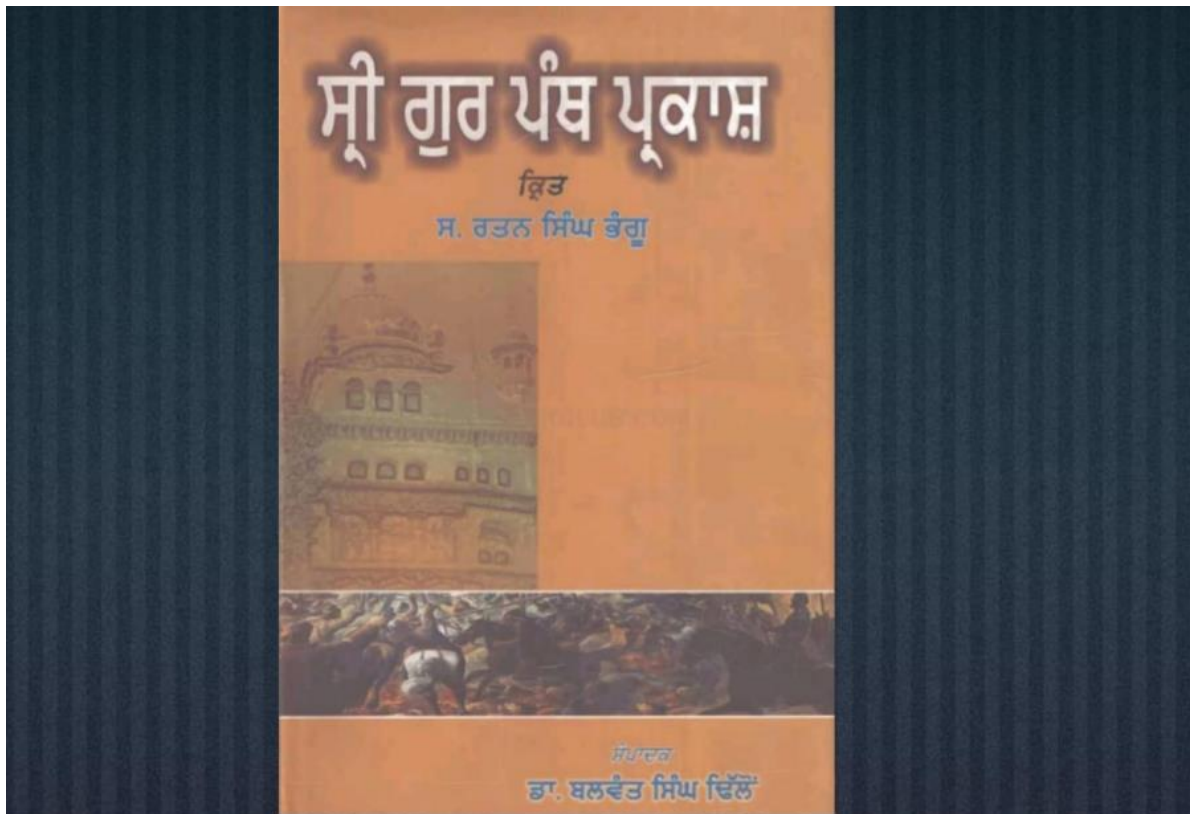
ਦੋਹਰਾ : ਦੁਸ਼ਟ ਦੁਸ਼ਟਾਈ ਨਹਿੰ ਤਜੇ, ਜਿਮ ਸਰਪ° ਤਜੇ ਬਿਖ° ਨਾਹਿ।
ਅਕਸਰ ਦੂਧ ਪਿਲਾਈਐ ਡੰਗ ਮਾਰਨ ਤੇ ਨ ਟਲਾਹਿ।੨੯।

ਚੌਪਈ : ਕਊ ਨ ਕਹੀ ਉਨ ਸਾਚੀ ਬਾਤ। ਝੂਠ ਕਹਯੋ ਉਨ ਸਮਝ ਸੁ ਘਾਤ°।
ਜਿਮ ਉਨ ਕਹਯੋ ਤਿਮ ਜਰਨੈਲ ਲਿਖ ਧਰਯੋ। ਸੱਚ ਝੂਠ ਤਬ ਨਾਹਿੰ ਬਿਚਰ
ਤੁਰਕ ਹਿੰਦੂ ਕੋ ਬੈਰ ਹੁਤੋ ਆਦ°। ਦੀਨ ਮਜ਼੍ਹਬ ਕੋ ਆਦੋ ਬਾਦ°।
ਝੂਠ ਕਹਿਨ ਮੈਂ ਜੇ ਰਿਪੁ° ਮਰੈ। ਤੁਰਕ ਹਿੰਦੂਅਨ ਤੇ ਕਬ ਟਰੈ।੩੦।

ਦੋਹਰਾ : ਭੁਜਾ° ਭਿਵਾਂਈਐਂ° ਤੇਲ ਸਿਉਂ, ਦੀਜੈ ਤਿਲੈਂ° ਲਗਾਇ।
ਮਾਰੋ ਹਿੰਦੂਅਨ ਕਸਮ ਕਰ, ਇਨ ਗਯੋ ਰਸੂਲ[2] ਬਤਾਇ।੩੧।
ਰਤਨ ਸਿੰਘ ਨੇ ਜਿਮ ਸੁਨੀ, ਸੋ ਤਉ ਧਰੀ ਲਿਖਾਇ।
ਸੁਨੋ ਸੰਤ ਮਨ ਲਾਇਕੈ, ਆਗੈ ਕਹੂੰ ਬਧਾਇ°।੩੨।

सिखों और मुसलमानों का ऐतिहासिक सांझ, पृष्ठः ९७
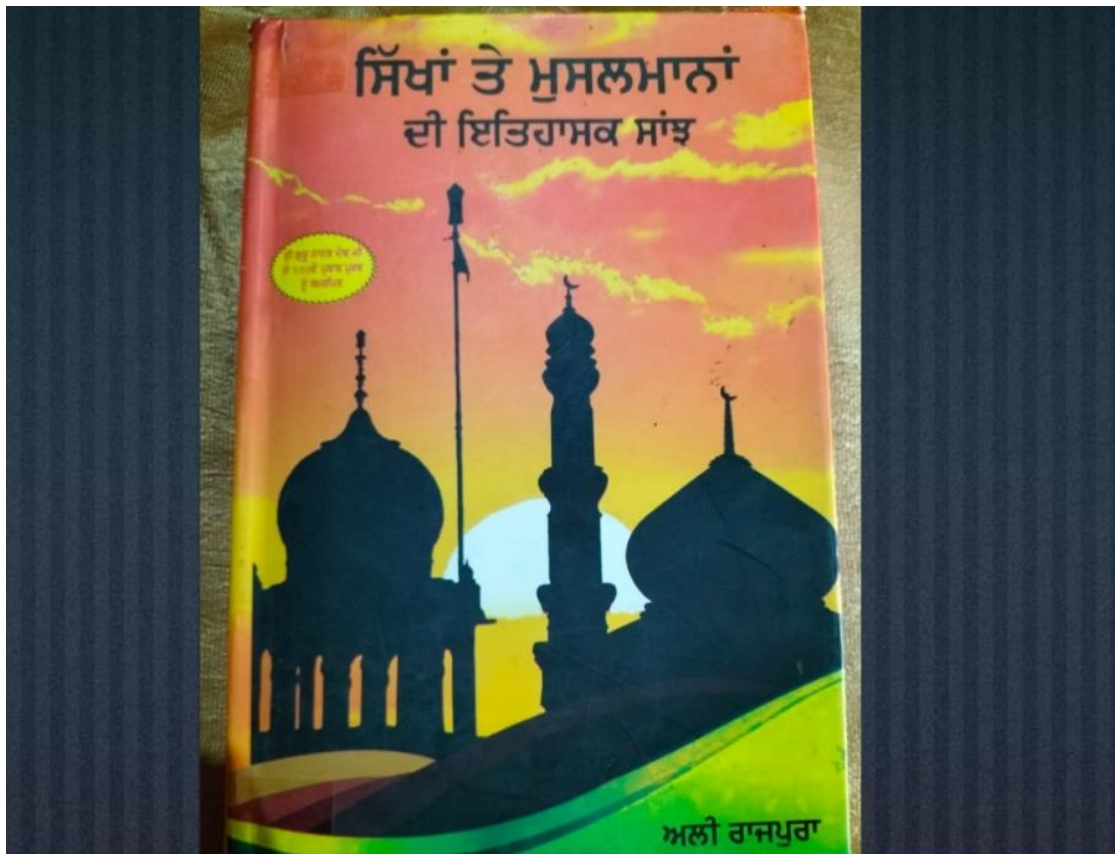
ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਦੇ ਅਰਬੀ ਫ਼ਾਰਸੀ ਦੇ ਉਸਤਾਦ ਸਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਅਰਬੀ ਅਤੇ ਫ਼ਾਰਸੀ ਦਾ ਗਿਆਨ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਵਾਇਆ। ਕਾਜ਼ੀ ਸਾਹਿਬ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਲਈ ਸ੍ਰੀ ਅਨੰਦਪੁਰ ਸਾਹਿਬ ਜਾਇਆ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਖ਼ਰੀ ਸਾਹ ਵੀ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡ ਸਲੋਹ ਵਿਖੇ ਲਿਆ ਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਖ਼ਾਕ-ਏ-ਸਪੁਰਦ ਵੀ ਸਲੋਹ ਵਿਚ ਹੀ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਸੀ। ਪਰ ਇਸ ਦੀ ਪੱਕੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਕਿਤੋਂ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ। ਉਂਝ ਪਿੰਡ ਦੇ ਬਜ਼ੁਰਗਾਂ ਦਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸਾਰਾ ਪਿੰਡ ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਪਿੰਡ ਅੱਜ ਵੀ ਤਿੰਨ ਮਸੀਤਾਂ ਜਿਉਂ ਦੀ ਤਿਉਂ ਸਾਂਭ ਸੰਭਾਲ ਹੇਠ ਹਨ ਭਾਵੇਂ ਇੱਥੇ ਇਕ ਵੀ ਘਰ ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਦਾ ਨਹੀਂ। ਇਹਨਾਂ ਤਿੰਨ ਮਸੀਤਾਂ 'ਚੋਂ ਦੋ ਮਸੀਤਾਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤ ਦਿੱਖ ਵਿਚ ਸਾਂਭਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੋ ਮਸੀਤਾਂ 'ਚ ਹੀ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਹੈ। ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਗਿੱਲ ਜਿਹੜੇ ਪੱਕੇ ਤੌਰ 'ਤੇ ਕੈਨੇਡਾ ਵਾਸੀ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਇਕ ਮਸੀਤ ਦੀ ਦੇਖ-ਰੇਖ ਇਕ ਪੱਕੇ ਸੇਵਾਦਾਰ ਰਾਹੀਂ ਕਰਵਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਪਿੰਡ ਵਾਸੀਆਂ ਅਨੁਸਾਰ ਕਾਜ਼ੀ ਪੀਰ ਮੁਹੰਮਦ ਵਾਲੀ ਥਾਂ ਉਸ ਵੇਲੇ ਪਾਠਸ਼ਾਲਾ ਬਣੀ ਹੋਈ ਸੀ ਜੋ ਅੱਜ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਸ਼ਟ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ। ਇਸ ਥਾਂ ਦੀ ਸਾਂਭ ਸੰਭਾਲ ਸ. ਜਗਜੀਤ ਸਿੰਘ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ।

श्री गोविंद सिंह जी, पृष्ठ: ७२ - ७८
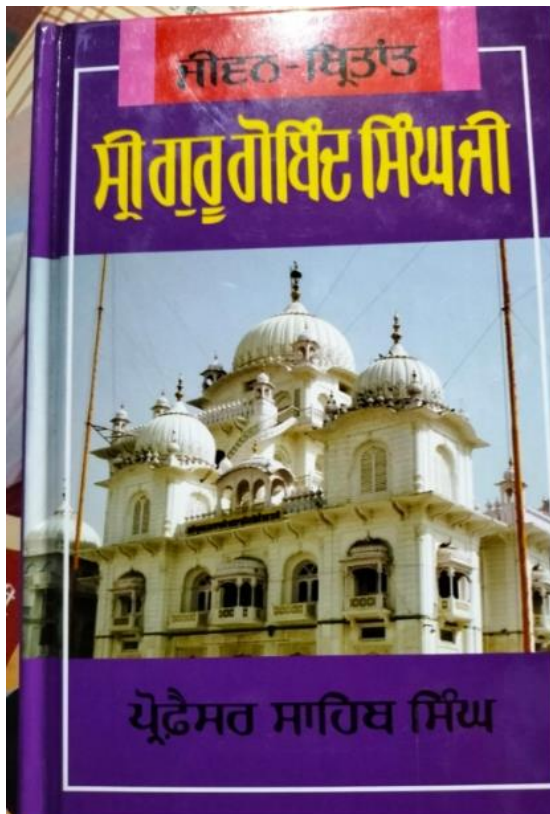
ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ

ਅੰਬਾਲਾ ਸ਼ਹਿਰ ਤੋਂ ਪੂਰਬ ਵਲ ਰਤਾ ਕੁ ਉੱਤਰ ਦੇ ਰੁਖ਼ ਵੀਹ ਕੁ ਮੀਲਾਂ ਦੀ ਵਿੱਥ ਤੇ ਸਾਢੌਰਾ ਨਾਮ ਦਾ ਇਕ ਕਸਬਾ ਹੈ। ਉਥੇ ਇਕ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸੱਯਦ ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਦਾ ਅਸਲ ਨਾਮ ਸਈਅਦ ਸ਼ਾਹ ਬਦਰੁੱਦੀਨ ਸੀ। ਇਲਾਕੇ ਵਿਚ ਉਸ ਦੀ ਬੜੀ ਮਾਨਤਾ ਸੀ। ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਮੁਰੀਦ ਸਨ। ਜਿਨ੍ਹੀਂ ਦਿਨੀਂ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਰਿਆਸਤ ਸਰਮੌਰ ਵਿਚ ਟਿਕੇ ਹੋਏ ਸਨ, ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਆਪਣੇ ਮੁਰੀਦਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਮਿਲਾਂਦਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਨੂੰ ਆਇਆ। ਪਾਉਂਟਾ ਸਾਹਿਬ ਸਾਢੌਰੇ ਤੋਂ ਪੂਰਬ ਵਲ ੨੫ ਕੁ ਮੀਲਾਂ ਦੀ ਵਿੱਥ ਤੇ ਹੈ। ਮੁਸਲਮਾਨ ਹਕੂਮਤ ਦੇ ਸਮੇ, ਅਨੇਕਾਂ ਪੀਰ ਫ਼ਕੀਰ ਇਸਲਾਮ ਦਾ ਪਰਚਾਰ ਕਰਨ ਲਈ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਦੇ ਪਰਸਿੱਧ ਟਿਕਾਣੇ-ਸਿਰ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਨਗਰਾਂ ਵਿਚ ਆ ਟਿਕੇ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਮਜ਼ਹਬ ਵਾਲੀ ਤੰਗ-ਦਿਲੀ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਪਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਭੀ ਅਜਿਹਾ ਹੀ ਇਕ ਮਨੁੱਖ-ਦਰਦੀ ਬੰਦਾ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਘਰ ਦੀ ਸੋਭਾ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਤੇਗ਼ ਬਹਾਦਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਅਦੁੱਤੀ ਪਰ-ਸੁਆਰਥੀ ਕੁਰਬਾਨੀ ਨੇ ਭਾਰਤ ਦੀ ਹਰੇਕ ਨੁੱਕਰ ਵਿਚ ਅਪੜਾ ਦਿੱਤੀ ਸੀ। ਅਜੇ ਨੌਂ ਦਸ ਸਾਲ ਹੀ ਹੋਏ ਸਨ। ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਭੀ ਕਿਵੇਂ ਬੇਖ਼ਬਰ ਹੋ ਸਕਦਾ ਸੀ ? ਉਸ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸਿੱਖ-ਧਰਮ ਦੇ ਉਚੇ ਆਦਰਸ਼ ਦੀ ਕਦਰ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦਾ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰ ਕੇ ਲੰਗਰ ਵਿਚ ਸਾਰੀ ਮਨੁੱਖਤਾ ਨਾਲ ਵਿਤਕਰਾ-ਹੀਣ ਸਲੂਕ ਵੇਖ ਕੇ ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਗੁਰੂ-ਘਰ ਦਾ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰੇਮੀ ਹੋ ਗਿਆ। ਉਸ ਵਕਤ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀ ਉਮਰ ੧੯ ਸਾਲਾਂ ਦੇ ਕਰੀਬ ਸੀ।

ਪੰਜ ਸੌ ਪਠਾਣਾਂ ਨੂੰ ਨੌਕਰੀ

ਜ਼ਿਲਾ ਕਰਨਾਲ ਵਿਚ ਕੁੰਜਪੁਰ ਦੇ ਨੇੜੇ ਪਿੰਡ ਦਾਮਲੇ ਦੇ ਵਸਨੀਕ ਪਠਾਣ ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਦੇ ਮੁਰੀਦ ਸਨ। ਫ਼ੌਜੀ ਨੌਕਰੀ ਹੀ ਉਹਨਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਰੋਜ਼ੀ ਦਾ ਵਸੀਲਾ ਸੀ। ਕਿਸੇ ਖ਼ੁਨਾਮੀ ਤੋਂ ਪੰਜ ਸੌ ਪਠਾਣ ਸ਼ਾਹੀ ਨੌਕਰੀ ਤੋਂ ਹਟਾ ਦਿੱਤੇ ਗਏ। ਕੋਈ ਹੋਰ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਉਹ ਜਾਣਦੇ ਨਹੀਂ ਸਨ। ਨੌਕਰੀ ਦੀ ਭਾਲ ਵਿਚ ਉਹ ਕਈ ਰਾਜਿਆਂ ਪਾਸ ਗਏ, ਪਰ ਔਰੰਗਜ਼ੇਬ ਤੋਂ ਡਰਦਿਆਂ ਕਿਸੇ ਨੇ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਬਾਂਹ ਨਾ ਫੜੀ। ਭੁੱਖ ਦੇ ਦੁੱਖੋਂ ਬਹੁਤ ਆਤੁਰ ਹੋ ਕੇ ਉਹ ਪਠਾਣ ਆਪਣੇ ਮੁਰਸ਼ਿਦ ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਪਾਸ ਆਏ। ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਪਾਉਂਟੇ ਸਾਹਿਬ ਰਹਿ ਕੇ ਵੇਖ ਆਇਆ ਸੀ ਕਿ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਬੀਰ-ਰਸ ਦੇ ਭੀ ਮਤਵਾਲੇ ਸਨ। ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਸਿੱਖ-ਗੱਭਰੂ ਉਹਨਾਂ ਪਾਸ ਆ ਆ ਕੇ ਤੀਰ ਤਲਵਾਰ ਆਦਿਕ ਸ਼ਸਤਰਾਂ ਦਾ ਅਭਿਆਸ ਕਰਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕਿਸੇ ਕੌਮ ਜਾਂ ਮਜ਼ਹਬ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਕੋਈ ਨਫ਼ਰਤ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਉਸ ਨੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੀ ਪਾਸ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਸਿਫ਼ਾਰਸ਼ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਆਪ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਜ਼ਾਮਨ ਬਣਿਆ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਾਸ ਨੌਕਰ ਰੱਖ ਲਿਆ। ਸਿੱਖ-ਇਤਿਹਾਸ ਨੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪੰਜ ਸਰਦਾਰਾਂ ਦੇ ਨਾਮ ਇਉਂ ਦਿੱਤੇ ਹਨ—ਕਾਲਾ ਖ਼ਾਂ, ਭੀਖਨ ਖ਼ਾਂ, ਨਜਾਬਤ ਖ਼ਾਂ, ਹਯਾਤ ਖ਼ਾਂ ਅਤੇ ਉਮਰ ਖ਼ਾਂ।

ਸਨ। ... ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਪਾਉਂਟੇ ਸਾਹਿਬ ਆ ਗਏ ਸਨ। ਧਰਮ-ਪਰਚਾਰ ਦੇ ਕੰਮ ਵਿਚ ਨਵੀਂ ਜਿੰਦ

੧. ਨੋਟ: ਜਾਦੂ ਨਾਥ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ, ਇਹ ਲਿਖਣ ਵੇਲੇ ਕਿ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਖੁਲ੍ਹਮ-ਖੁਲ੍ਹਾ ਇਸਲਾਮ ਦੀ ਵਿਰੋਧਤਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਸੀ, ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਚੇਤਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ ਜਾਪਦਾ ਕਿ ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਨੂੰ ਫ਼ੌਜ ਵਿਚ ਨੌਕਰ ਰੱਖ ਕੇ ਇਸਲਾਮ ਦੀ ਵਿਰੋਧਤਾ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਸੀ।

ਭੰਗਾਣੀ ਦੇ ਕੋਲ ਮੋਰਚੇ ਜਾ ਬਣਾਏ। ਰਾਜੇ ਉਸੇ ਪਾਸੇ ਵੱਲੋਂ ਹੀ ਆ ਰਹੇ ਸਨ। ਬੇ-ਵਫ਼ਾ ਹੋਏ ਪਠਾਣ ਭੀ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਸਨ। ੧੮ ਵੈਸਾਖ ਸੰਮਤ ੧੭੪੪ (੧੫ ਅਪ੍ਰੈਲ ਸੰਨ ੧੬੮੭) ਸ਼ੁਕਰਵਾਰ ਨੂੰ ਦੋਹਾਂ ਦਲਾਂ ਦਾ ਟਾਕਰਾ ਹੋਇਆ।

ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਦਾ ਆਉਣਾ

ਪਾਉਂਟੇ ਤੋਂ ਸਾਢੌਰਾ ਕੋਈ ਦੂਰ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਚਾਰ ਸੌ ਪਠਾਣਾਂ ਦੀ ਬੇ-ਵਫ਼ਾਈ ਦੀ ਖ਼ਬਰ ਤੁਰਤ ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਜਾ ਪਹੁੰਚੀ। ਪੀਰ ਆਪਣੇ ਚਾਰੇ ਪੁੱਤਰ, ਦੋਵੇਂ ਭਰਾ ਅਤੇ ਸੱਤ ਸੌ ਮੁਰੀਦ ਲੈ ਕੇ ਮਚੇ ਜੰਗ ਵਿਚ ਭੰਗਾਣੀ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ।

ਭੰਗਾਣੀ ਜੁੱਧ

ਇਸ ਜੰਗ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੀ ਭੂਆ ਬੀਬੀ ਵੀਰੋ ਜੀ ਦੇ ਪੰਜੇ ਪੁੱਤਰ ਸ਼ਾਮਲ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਨਾਮ ਸਨ—ਸੰਗੋ ਸ਼ਾਹ, ਜੀਤ ਮੱਲ, ਮੋਹਰੀ ਚੰਦ, ਗੁਲਾਬ ਰਾਇ ਅਤੇ ਗੰਗਾ ਰਾਮ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਮਾਮਾ ਕਿਰਪਾਲ ਚੰਦ ਜੀ ਨੇ ਭੀ ਜੰਗ ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਲਿਆ। ਦੀਵਾਨ ਨੰਦ ਚੰਦ, ਪਰੋਹਤ ਦਇਆ ਰਾਮ ਅਤੇ ਹੋਰ ਅਨੇਕਾਂ ਸਿੱਖ-ਗੱਭਰੂ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਪਾਤਿਸ਼ਾਹ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਤੋਂ ਕੁਰਬਾਨ ਹੋਣ ਲਈ ਇਕੱਠੇ ਹੋ ਗਏ ਸਨ। ਦੋਹੀਂ ਧਿਰੀਂ ਬਹੁਤ ਤਕੜਾ ਮੁਕਾਬਲਾ ਹੋਇਆ।

ਹੇਹਰਾਂ ਵਾਲਾ ਉਦਾਸੀ ਮਹੰਤ ਕਿਰਪਾਲ ਦਾਸ ਆਪਣੇ ਭਾਰੇ ਮੋਟੇ ਸੋਟੇ ਨਾਲ ਹੀ ਰਣ-ਭੂਮੀ ਵਿਚ ਜਾ ਗੱਜਿਆ। ਉਸ ਨੇ ਆਪਣੇ ਕੁਤਕ (ਸੋਟੇ) ਦੇ ਇਕੋ ਵਾਰ ਨਾਲ ਹੀ ਬੇ-ਵਫ਼ਾ ਹਯਾਤ ਖ਼ਾਂ ਦਾ ਸਿਰ ਫੇਹ ਦਿੱਤਾ। ਜੰਗ ਦੇ ਸਮੇ ਹੀ ਕਾਂਸ਼ੀ ਵਲ ਦਾ ਇਕ ਤਰਖਾਣ ਸਿਖ ਭਾਈ ਰਾਮਾ ਲੱਕੜ ਦੀਆਂ ਦੋ ਤੋਪਾਂ ਗੱਡੇ ਉਤੇ ਲੱਦ ਕੇ ਲੈ ਪਹੁੰਚਿਆ ਸੀ। ਉਹਨਾਂ ਤੋਪਾਂ ਦੇ ਵਰਤਣ ਨਾਲ ਪਹਾੜੀਆਂ ਵਿਚ ਘਬਰਾਹਟ ਮਚੀ। ਰਾਜੇ ਆਖ਼ਰ ਭਾਂਜ ਖਾ ਗਏ।

ਇਸ ਜੰਗ ਵਿਚ ਬੀਬੀ ਵੀਰੋ ਜੀ ਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤਰ ਸੰਗੋ ਸ਼ਾਹ ਅਤੇ ਜੀਤ ਮੱਲ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ। ਪੀਰ ਬੁੱਧੂ ਸ਼ਾਹ ਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤਰ ਅਤੇ ਇਕ ਭਰਾ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਭੀ ਕੁਝ ਕੁ ਜ਼ਖ਼ਮ ਲੱਗੇ ਸਨ। ਹੋਰ ਅਨੇਕਾਂ ਸਿੱਖ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ।

ਪਹਾੜੀ ਰਾਜਿਆਂ ਵਿਚੋਂ ਹੰਡੂਰ ਦਾ ਰਾਜਾ ਹਰੀ ਚੰਦ ਬੜੀ ਮਰਦਾਨਗੀ

सिखों और मुसलमानों का ऐतिहासिक सांझ, पृष्ठः ९६
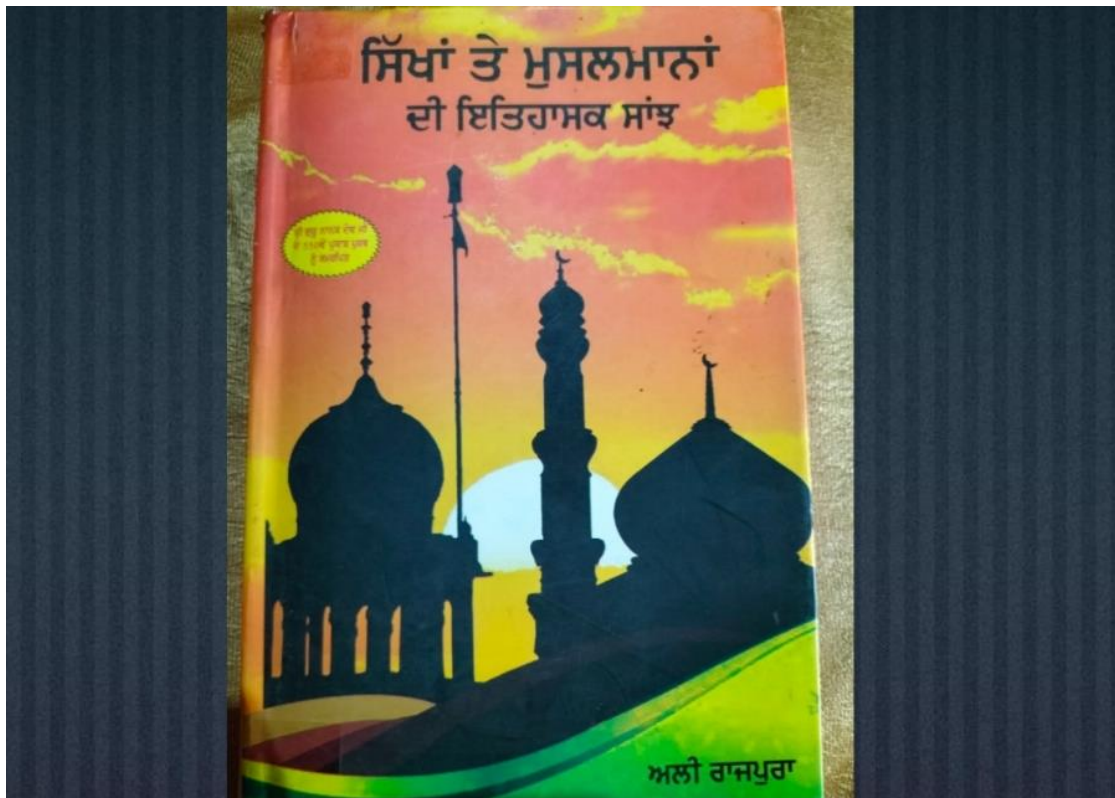
ਅਨਾਇਤ ਅਲੀ ਨੂਰਪੁਰੀਆ

ਮਾਛੀਵਾੜਾ ਦੇ ਨੇੜਲੇ ਪਿੰਡ ਨੂਰਪੁਰਾ ਦਾ ਵਾਸੀ ਸੀ ਕਾਜ਼ੀ ਅਨਾਇਤ ਅਲੀ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਲੋਕ ਜ਼ਿਆਦਾ ਕਾਜ਼ੀ ਨੂਰਪੁਰੀਆ ਆਖਦੇ ਸਨ। ਦੱਸਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ "ਜਦੋਂ ਮੁਗ਼ਲ ਸਿਪਾਹੀ ਨੇ ਕਾਜ਼ੀ ਨੂਰਪੁਰੀ ਨੂੰ ਸੱਦਿਆ ਕਿ ਸਿੱਖਾਂ ਦੇ ਦਸਵੇਂ ਗੁਰੂ ਦੀ ਭਾਲ ਵਿਚ ਇਕ ਉੱਚ ਦੇ ਪੀਰ ਦੀ ਸ਼ਨਾਖ਼ਤ ਕਰਨੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇੰਨਾ ਸੁਣ ਕੇ ਕਾਜ਼ੀ ਜੀ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਪਾਣੀ ਦਾ ਲੋਟਾ ਡਿੱਗ ਪਿਆ ਸੀ।" ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਭਾਵੇਂ (ਕਾਜ਼ੀ ਜੀ ਨੇ) ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਪਛਾਣ ਲਿਆ ਸੀ ਪਰ ਫੇਰ ਵੀ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ, "ਉਹ ਉੱਚ ਦਾ ਪੀਰ ਐ। ਕਾਜ਼ੀ ਜੀ ਦੀ ਯਾਦ 'ਚ ਪਿੰਡ ਵਾਸੀਆਂ ਨੇ "ਗਵਾਹੀ ਸਾਹਿਬ" ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਦਸਵੀਂ ਗੁਰੂ ਘਰ ਉਸਾਰਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿੰਡ ਕਾਜ਼ੀ ਜੀ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿਚ ਕੋਈ ਮਜ਼ਾਰ ਜਾਂ ਯਾਦਗਾਰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਉਸਰੀ। ਬਹੁਤੇ ਪਿੰਡ ਵਾਸੀ ਇਸ ਮਹਾਨ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਤੋਂ ਅਣਜਾਣ ਹਨ। ਕੁਝ ਇਤਿਹਾਸਕ ਪੁਸਤਕਾਂ ਦੇ ਤੱਥਾਂ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਤਰਾਂ ਨੂੰ ਲਿਖਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਕਾਜ਼ੀ ਪੀਰ ਮੁਹੰਮਦ

ਪਿੰਡ ਸਲੋਹ ਦੇ ਬਸ਼ਿੰਦੇ ਸਨ ਕਾਜ਼ੀ ਪੀਰ ਮੁਹੰਮਦ ਜੀ। ਇਹ ਪਿੰਡ ਨਵਾਂ ਸ਼ਹਿਰ ਤੋਂ ਦੱਖਣ ਵੱਲ ਨੂੰ ਕਰੀਬ ਦੋ ਕਿਲੋਮੀਟਰ 'ਤੇ ਵਸਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਦਸਮ ਪਿਤਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ

गुरु ग्रंथ साहिब, राग मारू, म: ५ पृष्ठ: १०८३
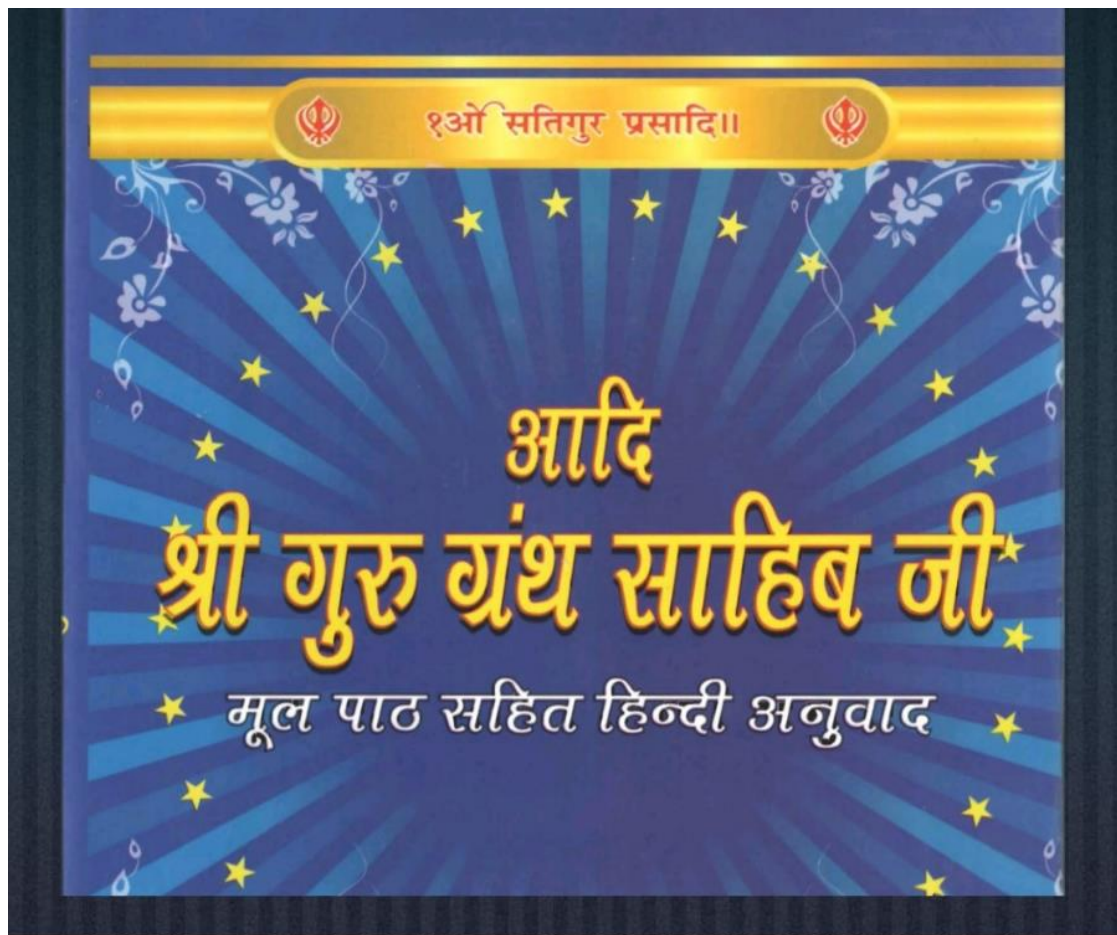
हलालु बखोरहु खाणा ॥ दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा ॥ पीरु पछाणै भिसती सोई अजराईलु न दोज ठरा ॥ ११ ॥ काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ रंग तमासे माणि हकीना ॥ नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा ॥ १२ ॥ मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ अंतर की मलु दिल ते धोवै ॥ दुनीआ रंग न आवै नेड़ै जिउ कुसम पाटु घिउ पाकु हरा ॥ १३ ॥ जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ सोई मरदु मरदु मरदाना ॥ सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा ॥ १४ ॥ कुदरति कादर करण करीमा ॥ सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥ हकु हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा ॥ १५ ॥ ३ ॥ १२ ॥

गुरु ग्रंथ साहिब, राग गउड़ी, म: ४ पृष्ठ: ३०८

गुरु ग्रंथ साहिब, राग धनासरी, म: ४ पृष्ठ : ६६७
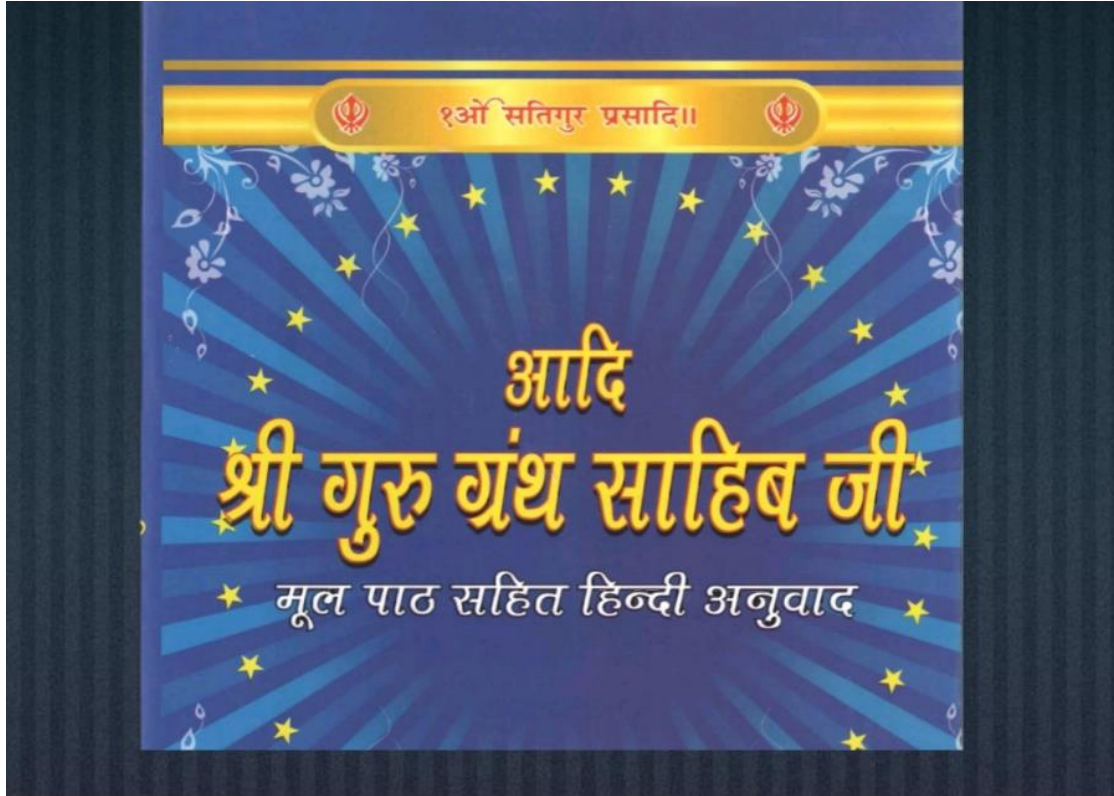
मः ४ ॥ सतिगुर सेती गणत जि रखै हलतु पलतु सभु तिस का गइआ ॥ नित झहीआ पाए झगू सुटे झखदा झखदा झड़ि पइआ ॥ नित उपाव करै माइआ धन कारणि अगला धनु भी उडि गइआ ॥ किआ ओहु खटे किआ ओहु खावै जिसु अंदरि सहसा दुखु पइआ ॥ निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ॥ ओसु अगै पिछै ढोई नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अंबु पइआ ॥ जे सुइने नो ओहु हथु पाए ता खेहू सेती रलि गइआ ॥ जे गुर की सरणी फिरि ओहु आवै ता पिछले अउगण बखसि लइआ ॥ जन नानक अनदिनु नामु धिआइआ हरि सिमरत किलविख पाप गइआ ॥ २ ॥

धनासरी महला ४ ॥ हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥ सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥ १ ॥ गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥ जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥ २ ॥ हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥ ३ ॥ हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥ ४ ॥ ४ ॥